

# शहर के प्रोफेसर, युवा और स्टार्टअप के काम में पर्यावरण हित शामिल सेव अर्थ के लिए टॉक्सिक गैस पर निगरानी, कार्बन रिड्यूस और यूज्ड प्लास्टिक से कपड़ा बना रहे युवा

गजेंद्र विश्वकर्मा | इंदौर

एक ओर कार्बन को कम करने के लिए भारत ने भी सभी देशों से वादा किया है, वहीं हमारे शहर में भी कई कोशिश जारी हैं। शहर के एक प्रोफेसर और उनकी टीम ने टॉक्सिक गैस की जानकारी देने वाला डिवाइस बनाया है जिस पर पेटेंट मिला है। तीन नौजवानों ने जनरेटर से निकलने वाला कार्बन 91% तक कम करने पर काम किया है। वहीं एक स्टार्टअप ने सिंगल यूज प्लास्टिक वाली पानी की 10 लाख बोतल से 40 हजार प्रोडक्ट बनाए हैं। अर्थ डे पर पढ़िए 'सेव अर्थ' से जुड़े इन प्रयासों को।

## 4-5 साल लाइफ वाले प्रोडक्ट

मनवीर सिंह खनूजा ने 'इको धरा' स्टार्टअप के तहत शहर की 10 लाख यूज्ड पानी की बोतल को रिसाइकल कर 40 हजार प्रोडक्ट तैयार किए हैं। उन्होंने बताया कि हमने जो सामग्री बनाई है उसकी लाइफ चार से पांच साल है और इसके बाद फिर से इसे रिसाइकल कर बैग तैयार किए जा सकते हैं। पानी की बोतल एकत्रित कर इससे प्लास्टिक के फोल्डर और अन्य सामग्री बनाकर पर्यावरण सुधार का संदेश टीम ने दिया था। इससे प्लास्टिक का कौटन जैसा कपड़ा भी बनाया जा सकता है।



प्लास्टिक से बनी है यह जैकेट



## जनरेटर से निकलने वाले कार्बन को 91% तक कम करने वाला डिवाइस बनाया इन युवाओं ने

इंडस्ट्रीज में बड़े पैमाने पर जनरेटर का उपयोग हो रहा है और इससे काफी कार्बन निकलकर पर्यावरण को दूषित कर रहा है। इसे रोकने के लिए शहर के हर्ष नीखरा, दिव्यांक गुप्ता और गगन त्रिपाठी ने रिसर्च

कर ऐसी डिवाइस बनाई है जिससे जनरेटर से निकलने वाले कार्बन को 91 प्रतिशत तक कम कर सकते हैं। हर्ष का कहना है कि हमारी टेक्नोलॉजी के तहत कार्बन पार्टिकल को चार्ज करके हवा में से निकाल लेते हैं।

यह फिल्टर लैस है। इसे पेटेंट भी मिल चुका है। इन डिवाइस का उपयोग दिल्ली, गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र, पंजाब सहित कई राज्यों में हो रहा है। खास बात यह है कि डिवाइस में मौजूद कार्बन से ब्लैक इंक बना रहे हैं।

## जहरीली गैस के रिसते ही 'ई-नोज' बजा देगी अलार्म

आईआईटी इंदौर के प्रोफेसर ने इंडस्ट्रीज और कोयला खदानों में काम करने वाले लोगों की जान बचाने के लिए टॉक्सिक गैस डिटेक्ट करने के लिए 'ई नोज' डिवाइस बनाई है। इसके लिए आईआईटी बॉम्बे ने 10 लाख रुपए दिए और इसे दो पेटेंट मिले हैं। जैसे ही इंडस्ट्रीज में थोड़ी सी भी जहरीली गैस डिटेक्ट होगी यह पोर्टेबल डिवाइस अलार्म बज देती है। ई नोज में नाइट्रोजन डाइऑक्साइड, हाइड्रोजन सल्फाइड, अमोनिया, कार्बन मोनोऑक्साइड और अन्य गैसों की पहचान करने में सक्षम है। पांच साल रिसर्च और दो साल प्रोडक्ट बनाने में लगे हैं। इसे प्रो. शैबल मुखर्जी, डॉ. पल्लवी मुखर्जी, डॉ. चंद्रभान पटेल, मयंक दुबे, सुमित चौधरी, विकास वर्मा, ब्रम्हदत्त महापात्रा और अजीत यादव के सहयोग से बनाया गया है।

